ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-3*April- 2018
Innovation The Research Concept

अलीगढ़ जनपद के मदिरापान करने वाले एवं मदिरापान न करने वाले तरूण एवं प्रौढ़ो के व्यक्तित्व का एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन

कृपाल सिंह
शोधार्थी
मनोवैज्ञानिक विभाग,
श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय,
अलीगढ़

सारांश

किसी भी शोध पत्र का उद्देश्य समस्या का उत्तर प्राप्त करना या किसी सुझाये गये उत्तर की जॉच करना होता है। प्रस्तुत अध्ययन कार्यो का उद्देश्य ''उच्च, मध्य एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के मदिरापान करने वाले एवं मदिरापान न करने वाले तरूणों एवम् प्रौढ़ों के व्यक्तित्व शील गुणों एवं चिन्ता स्तर का अध्ययन'' करना इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है। इस संबंध में उपयुक्तों तथ्यों को प्राप्त कर एक निश्चित निष्कर्ष तक पहुॅचना होता है तथा किसी भी शोध पत्र की योजना बनाते समय इसके लिए उपर्युक्त अभिकल्प का चुनाव किया जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र के उद्देष्य को ध्यान में रखते हुए इसके अभिकल्प के स्वरूप को निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द : मदिरापान, सामाजिक–आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, अध्ययन

प्रस्तावना

वर्तमान शोध पत्र अनेक चरों से युक्त ''एक्स–पोस्ट–फैक्टो'' अनुसंधान के अन्तर्गत आता है। इसका स्वरूप प्रयोगात्मक अनुसंधान कार्य से भिन्न है क्योंकि प्रयोगात्मक अनुसंधान में शोधकर्ता/शोधकर्त्री आश्रित चर पर स्वतंत्र चर के प्रभाव को देखते है तथा उसे स्वतंत्र रूप से नियंत्रित करते है। ''एक्स–पोस्ट–फैक्टो'' अनुसंधान में शोधकर्ता/शोधकर्त्री उन घटनाओं को देखने का प्रयास करते है जो पहले से घटित हो चुकी है। इसमें शोधकर्त्रा/शोधकर्त्री स्वतंत्र चरों को नियंत्रित नहीं करते बल्कि आश्रित चरों के आधार पर खोज करते है। सामाजिक अनुसंधानों में जैसे– अभिवृत्ति, नेतृत्व, मूल्य, शैक्षिक निश्पत्ति इत्यादि में इसका विशेष प्रयोग होता है। वर्तमान शोध पत्र भी किसी न किसी रूप में ''एक्स–पोस्ट–फैक्टो'' अनुसंधान से संबंधित है।1

चर

प्रस्तुत शोध पत्र में चरों का प्रस्तुतीकरण इस प्रकार हैः–

स्वतंत्र चर

इसके अन्तर्गत जिन चरों को प्रस्तुत किया गया है। उनका विवरण इस प्रकार है –

सामाजिक–आर्थिक स्तर

(उच्च, मध्य एवं निम्न तीन स्तर)।[2]

अवस्था (आयु)

तरूण एवं प्रौढ़ (दो स्तर)।

समूह

मदिरापान करने वाले एवं मदिरापान न करने वाले (दो स्तर)

आश्रित चर

प्रस्तुत शोध पत्र के आश्रित चरों का विवरण इस प्रकार है।

व्यक्तित्व शीलगुण

12 शीलगुण

चिन्ता

1 स्तर

प्रासंगिक चर

प्रस्तुत अध्ययन में प्रमुख प्रासंगिक चरों का विवरण इस प्रकार है। धर्म, संस्कृति, जाति, बौद्धिक स्तर, शैक्षिक स्तर, लिंग इत्यादि। इन प्रासंगिक चरों को यादृच्छीकरण विधि या स्थिरता विधि या निष्कासन विधि द्वारा नियंत्रित किया गया है। चरों को उनके स्वरूप एवं स्थिति के आधार पर ही नियंत्रित किया गया

है। आश्रित चरों के विवरण को तालिका संख्या 3:1 में प्रस्तुत किया गया है। या निष्कासन विधि द्वारा नियंत्रित किया गया है। चरों को उनके स्वरूप एवं स्थिति के आधार पर ही नियंत्रित किया गया है। आश्रित चरों के विवरण को इस तालिका में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका संख्या 3:1

सामाजिक आर्थिक स्तर	तरूण		प्रौढ़		व्यक्तित्व शीलगुण	चिन्ता स्तर
	मदिरापान करने वाले	मदिरापान न करने वाले	मदिरापान करने वाले	मदिरापान न करने वाले		
उच्च	50	50	50	50	सत्य, अंहिसा, ब्रह्मचर्य, उपग्रिह, अस्तेय, षौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्राणिद्यान, बुद्धि एवं धैर्य	चिन्ता
मध्य	50	50	50	50	उपर्युक्त	उपर्युक्त
निम्न	50	50	50	50	उपर्युक्त	उपर्युक्त

प्रस्तुत शोध–पत्र उच्च, मध्य एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के मदिरापान करने वाले एवं मदिरापान न करने वाले तरूणों एवम् प्रौढ़ों के व्यक्तित्व शील गुणों एवं चिन्ता स्तर का अध्ययन से संबंधित है।3

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र उच्च, मध्य एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के मदिरापान करने वाले एवं मदिरापान न करने वाले तरूणों एवम् प्रौढ़ों के व्यक्तित्व शील गुणों एवं चिन्ता स्तर का अध्ययन से संबंधित है। अतः व्यक्तित्व शील गुणों एवं चिन्ता स्तर का मापन करने के लिए मानवीकृत परीक्षणों का प्रयोग किया गया है। जिन्हें प्रतिदर्श की सभी इकाइयों पर सावधानीपूर्वक प्रशासित किया गया है।4

अध्ययन की विधि

किसी भी शोध पत्र में तथ्यों को एकत्रित करने के लिये उपयुक्त प्रतिदर्श की आवश्यकता होती है। क्योंकि इसके अभाव में किसी भी समस्या के सन्तोषजनक परिणाम प्राप्त नहीं हो सकते है तथा सम्पूर्ण अनुसंधान पत्र निरर्थक हो जाता है। इसीलिये अनुसंधान पत्र में प्रतिदर्श की परम आवश्यकता होती है।

जब हम समग्र में Total Population (जिनके सम्बन्ध में हम अध्ययन करना चाहते है) का कुछ प्रतिनिधित्व तत्वों के द्वारा चयन उपर्युक्त विधियों के माध्यम से कर लेते है। तब तत्वों के समूह को प्रतिदर्श कहते है और इसकी सम्पूर्ण इकाई को पोपुलेशन (Population) या समग्र कहते है। किसी भी व्यक्ति में सम्पूर्ण पोपुलेशन का मापन प्रायः सम्भव नहीं होता है। इसीलियें उसमें से एक ऐसे समूह का चयन किया जाता है, जो उनका प्रतिनिधित्व कर सके। प्रस्तुत शोध पत्र में ''स्तरानुसार यादृच्छीकरण प्रतिदर्श विधि'' का प्रयोग किया गया है। क्योंकि इस विधि से उपयुक्त प्रतिदर्श का चयन करना अपेक्षाकृत सरल एवं महत्वपूर्ण होता है।5

अध्ययन का क्षेत्र

प्रस्तुत शोध पत्र के लिए अलीगढ़ जनपद के उच्च, मध्य एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के मदिरापान करने वाले एवं मदिरापान न करने वाले तरूण एवं प्रौढ़ को स्तरानुसार यादृच्छीकरण प्रतिदर्श विधि के द्वारा चुना गया है।6 जिनमें तरूणों की आयु 25 से 35 वर्ष तथा प्रौढ़ों की आयु 45 से 55 वर्ष के बीच है। इस तरह प्रतिदर्श में चुने गये तरूण एवं प्रौढ़ों की संख्या 600 है। जिनमें 300 तरूण तथा 300 प्रौढ़ है। उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के अन्तर्गत के अन्तर्गत 50 मदिरापान करने वाले तरूण तथा 50 मदिरापान न करने वाले तरूणों को चुना गया है। इसी सामाजिक–आर्थिक स्तर के अन्तर्गत 50 मदिरापान करने वाले तरूण तथा 50 मदिरापान न करने वाले तरूणों को चुना गया हैं इसी के अन्तर्गत 50 मदिरापान करने वाले प्रौढ़ तथा 50 मदिरापान न करने वाले तरूणों को चुना गया है।7 इसी के अंतर्गत 50 मदिरापान करने वाले प्रौढ़ तथा 50 मदिरापान न करने वाले प्रौढ़ों को चुना गया है। जो तालिका संख्या 3:2 से स्पष्ट है।

तालिका संख्या 3:2

सामाजिक आर्थिक स्तर	अवस्था (आयु)				
	तरूण		प्रौढ़		योग
	मदिरापान करने वाले	मदिरापान न करने वाले	मदिरापान करने वाले	मदिरापान न करने वाले	
उच्च	50	50	50	50	200
मध्य	50	50	50	50	200
निम्न	50	50	50	50	200
योग	150	150	150	150	600

निष्कर्ष

प्रतिदर्श को अलीगढ़ जनपद से इसलिये चुना गया है क्योंकि यहॉ पर अनेक प्रकार की शिक्षण संस्थायें विद्यमान है। इसके साथ ही साथ इस नगर में लघु एवं बड़े उद्योग–धन्धों का जाल बिछा हुआ है। यह जनपद अपने ताला उद्योग, भवन निर्माण सामग्री तथा मूर्तियों के

निर्माण के लिये भारत में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। इसी प्रकार से यह नगर अनेक प्रकार के उद्योग धन्धों से युक्त है। यातायात एवं संचार की उपर्युक्त सुविधा होने के कारण जनपद का विकास अत्यधिक तीव्र गति से हो रहा है। अपने विकास के कारण ही इस जनपद ने महानगर का दर्जा प्राप्त कर लिया है। इस जनपद में यद्यपि हिन्दू एवं मुस्लिम धर्मो के लोगों का बाहुल्य है तथा दोनों ही संस्कृतियों के लोग अपने–अपने ढंग से रहते है। फिर भी इनमें आपस मे बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध है। यहाँ के लोग एक दूसरे के बहुत ही निकट है।[8]

अतः प्रस्तुत शोध पत्र के लिये अलीगढ़ जनपद के उच्च, मध्य एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के मदिरापान करने वाले एवं मदिरापान न करने वाले तरूणों एवम् प्रौढ़ों के व्यक्तित्व शील गुणों एवं चिन्ता स्तर का अध्ययन एक विशेष महत्व रखता है।

संन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *सिती एसाह (2012) : द कम्पेरीजन ऑफ इसनियन अर्बन, सब अर्बन एंड रूरल एरियाज परफोरमेंस इन सेल्फ–कॉन्सेप्ट, सेल्फ एफिकेसी, सेल्फ एस्टीम एंड एंग्जाइटी। जर्नल साफ अमेरिकन साइंस। वॉ0–8 (3), पृ0– 371–376*
2. *सिंथिया ए0 पेड्रेगॉन एवं (2012) : सोशल डिजायरेबिलिटी, पर्सनॉलिटी क्वेश्चनेयर्स एंड द''वेटर दैन एवरेज'' इफैक्ट। जर्नल ऑफ पर्सनॉलिटी एंड इंडीविजुअल डिफरेंसेज। वॉ0–52, नं0–2, पृ0–213–217*
3. *सिंह, अजय कुमार (2006) : उच्च, मध्य एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व शीलगुणों एवं समायोजन स्तर का अध्ययन। डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर वि0वि0, आगरा को प्रस्तुत शोध प्रबंध (अप्रकाशित)।*
4. *सिंह, अरूण कुमार (2001) : मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियॉ। प्रकाशक– मोतीलाल बनारसी दास, चौक, वाराणसी।*
5. *सिंह अरूण कुमार (2002) : उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान। प्रकाशक मोती लाल बनारसीदास, दिल्ली–7*
6. *सिंह, आशालता (2000) : विभिन्न रक्त वर्गो के किशोर, तरूण एवं प्रौढ़ पुरूषों एवं स्त्रियों की संवेगात्मक परिपक्वता तथा व्यक्तित्व शीलगुणों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन। डॉ0 बी0 आर0 अम्बेडकर वि0वि0 आगरा को प्रस्तुत शोध प्रबन्ध (अप्रकाशित)*
7. *सिंह, उमेद एवं परिका (2012) : साइकियेट्रिक आस्पेक्ट एंड ट्रीटमेंट कंसीडरेशंस इन एपीलेप्सी। इंडियन जर्नल ऑफ हेल्थ एंड वैलवींग। वॉ0–3 (2), पृ0–375–378*
8. *सिंह, ए0 एवं सिंह एस0 (2008) : स्ट्रेस एंड एडजस्टमेंट एमोंग प्रोफेशनल एंड नोन प्रोफेशनल स्टूडेंट्स ऑफ तमिलनाडू। इंडियन जर्नल ऑफ साइकेट्री। जे–2008, 17:26–27*